Writers => Abhinav Chaudhary
Avhik Dey

141. नारद मेरो साधु से अंतर नहीं, मेरे घट में साधु बसत हैं, मैं साधु के माहीं । टेक
साधु के जिमाये से मैं जीमूं, होय अति तृप्त अघाऊं ।
साधु दुखाये से मैं दुःख पाऊं, व्याकुल होय घबड़ाऊं ।।
जागे साधु तो मैं जागूं, सोवे साधु तो मैं सोऊं ।
जो कोई साधु से द्रोह करे तो, जरा मूल से खोऊं ।। टेक
जहाँ साधु मेरा यश गावे, ताहि मैं करूं निवास ।
साधु चले आगे उठ धाऊं, मोही साधुन की आश ।। टेक
माया मेरी है अर्द्धांगिनी, सो साधुन की दासी ।
अड़सठ तीरथ साधु चरण में , कोटि गया अरूणा काशी ।। टेक
साधु को ध्यान मेरे उर अंदर, रहत निरंतर भाई ।
कहे कबीर सा. साधु की महिमा, असहरि निज मुसागाई ।। टेक

==

142. संत का होना मुश्किल है, काम-क्रोध की चोट बचावे जो निज साधु है । टेक
काया मध्य धुनी धकावे, धरम का राम रमे है ।
करम गाठ कोयला करि डारे, जग से न्यारा है ।। टेक
आशा-तृष्णा, कलह-कल्पना, ममता दूर करे ।
दम्भमान धन लोभ-मोह से, आठों पहर लड़ें ।। टेक
साधु माया महाठगनी है, हरि की ज्ञान राम हरे ।
तासे होय होशियार निरंतर, गुरूपद ध्यान धरें ।। टेक
साधु मोही माया सब कोई त्यागे, झीनी नहीं तजे ।
कहे कबीर सा. साधु सोई सांचा, झीनी देखी भजे ।। टेक

==

Publisher => Dhanpat Rai. PVD. LTD. INDIA

143. संतो दृष्टि परे सो माया, वह तो अचक अलेखा एक है ज्ञान दृष्टि में आय । टेक
सतगुरू दिया बताय, आप ही में है माही संत से ।
दूजा किरतम थाप लिया, मुक्त कौन विधि होय । टेक
काया झांई त्रिगुण तत्व की, जिन से लहवा जाई ।
जल तरंग जल ही से उपजे, फिर जल माहीं समाई । टेक
ऐसी देह सदागह सबकी मन में, हरदम कोई उचारे ।*
आपे भयो नाम घट न्यारा, इस विधि माया देख विचारे । टेक
आपे रहो समाय समझाइये, न कहु जाय न आवे ।
ऐसी स्वासा समझ परे ▪ जब, पूर्ज काह पुजावे । टेक
धरे न ध्यान करे न जप, तप रहनी न गावे ।
तीर्थ वृत सकलो ब्रम्ह छाड़े, सन्न डोर न जावे । टेक
जुगती से कर्म न छूटे, आप अपण न सूझे ।
कहे कबीर सा. सो संत जौहरी, जो या समझे सो बूझे । टेक

==

144. विज्ञानी सतगुरू की बानी लो, जे ही प्रताप भये बैरागी ।
त्याग सकल कुल मानी लो । टेक
पहले बहुत दिनों तक भटके, सुनी-2 बात पिरानी लो ।
अब कुछ उर में पाप भयो, थीर आदि कथा सदह दानी लो । टेक
आय पड़्यो कानन मूं मेरे, अधर शब्द असमानी लो ।*
जड़ चेतन की ग्रंथी छुट्टी, भयो भिन्न पटापानी लो ।।टेक
कुमति गई प्रगट भई सुमती, रमता से रूचि मानी लो ।
लालच मोह-लोभ ममता को, मिट गई ऐसा मानी लो ।।टेक
चंचल मन निश्चय हो बैठा, सुरती-निरती ठहरानी लो ।
कहे कबीर सा. दया सतगुरू की, मिली इटल रजधानी लो ।। टेक

==

145. मेरी नजर में मोती आया है, करके कृपा दयानिधि ।
सतगुरू घट के बीच दिखाया है । टेक
कोई कहे हल्का, कोई कहे भारी, सब जग भरम भुलाया है ।
ब्रम्हा, विष्णु महेश्वर देवा, कोई पार नहीं पाया है । टेक
शारदा शेष-गणेश, सुरेश, विविध जासु गुण गाया है ।*
नैतो-2 कही महिमा वरणत, वेद हमन सकुचाया है ।।टेक
विदल चतुर वह अष्ट द्वादस , सहस्त्र कमल बिचकाया है ।
ताके ऊपर आप विराजे, अद्भुत रूप धराया है ।। टेक
तील के झिलमिल तील भीतर, ता तिल बीच छिपाया है ।
तिनका आड़ पहाड़सी भासे, परम पुरूष की छाया है ।। टेक
अनहद की धुन भंवर गुफा में अति घनघोर है ।
बाजे बजे अनेक महंत के, सुनि के मन ललचाया है ।। टेक
पुरूष अनामी सबका स्वामी, रूचि निज पिंह समाया है ।
ताकी नमल देखि माया ने, वह ब्रम्हाण्ड बनाया है ।। टेक
यह सब काल-जाल को फंद, मन कतयी न ठहराया है ।
कहे कबीर सा. भत्यपद, सतगुरू न्यारा करि दर्शाया है ।। टेक

==

146. सुल्ताना बलख बुखा रे दां, शाही तज कर लिया , फकीरी अल्ला नाम पिया रे छोड़
तब ये खाते लुकमा मिसरी, कंद-मूल छुहारे ** दां ।
अब तो रूखा-सूखा, टूका खाते, सांझ सवेरे दां ।।
जात न पहने खासा मलमल, टंक नौ ता रेदां ।
अब तो बोझ उठावन लागे, गुदड़ दस मन भारेंदा ।।
चुन-2 कलियां रोज बिछाते, फूलो न्यारे-2 दां ।
अब धरती पर सोवन लागे, कंकर नहीं बहारेंदा ।।
जिनके संग कटक दल बादल, झंडा जरी किनारे दां ।
कहे कबीर सा. सुनो भाई साधौ, फक्कड़ हुआ आंखारेंदा ।।

==

147. भक्ति का मारग झीना, कोई जाणे जाननहारा ।
संत जन वो परवीना । टेक
ना कोई चाह-अचाह न, तामें मन लवलीना रे ।
संतों की संगत में निशदिन रहता मीना रे ।।
शब्दों में सुरती बसे, जल बिच मीना रे ।
जल बिछड़त तत्काल होय, यों कवल मलीता रे ।।
धन कुल औ अभिमान, त्यागकर, हुआ अंदीना रे ।
परमारथ के हेत-हेत सिर, विलग न कीना रे ।।
धारण कियो संतोष सदा, अमृत रस पीना रे ।
भक्ति की रहनी कबीरजी, प्रगट कह दीना रे ।।

===

148. संतो सतगुरू अलख लखाया, जासा आप अपन दर्शाया ।
बीज मध्य ज्यों वृक्ष देखिये, वृक्ष मध्य छाया ।।
पात-2 में आतम जैसे, आतम मध्ये माया औंकारा ।। टेक
ज्यो रवि मध्ये किरण, किरण मध्ये परकाशा ।
पार ब्रम्ह ते जीव ब्रम्ह है, जीव मध्य में श्वांसा ।। टेक
श्वांसा मध्ये शब्द देखिये, अर्थ शब्द माहीं ।
ब्रम्हते जीव, जीव ते मन, न्यारा मिला सदा ही ।। टेक
आपे वृक्ष अंकुरा आप, फूल-फल छाया ।
सूरज किरण प्रकाश आप ही, आप ब्रम्ह जीव माया ।। टेक
आतम में परमातम साई, साईं में परछाई ।
सब में बोले लखै मौरे, संत कबीर साईं ।। टेक

===

149. साहेब मेरा मेर है, जिनने मेहरम बताया । टेक
क्या बकरी ने क्या भेड़ है, क्या अपना जाया ।
गलबीच छुरिया चलात है, तुझे दया नहीं आया ।। टेक
मिया मौज की बंदगी, मस्जिद बनवाया ।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा है खुदाय ।। टेक
कंकर पत्थर जोड़ के, मन्दिर बनवाया ।
ज्ञान गुरू ने झाड़ू दिया, कचरा दिया निकाल ।। टेक
आँख मिची ने मुनिजन भया, मन मैला रे भाया ।
देखण का बग उजला, मछली गटकाया ।। टेक
कहे कबीर धर्मदासा से, सतलोक पठाया ।
साहेब मेरा मेर है, जिनने मेहरम बताया ।। टेक

==

150. जीव तू अमरलोक को, पड़ियो काल बस आई ।
मन स्वरूपी देव निरंजन, तुझे राखे भरमाई ।। टेक
पाँच पच्चीस तीन का पिंजरा, जिसमें तुझको राखे ।
तू क्यों सुधी बिसर गयो, घर की महिमा अपनी भाई ।। टेक
निराकार त्रिगुण है साया, तुमको नाच-नचावे ।
चर्म दृष्टि के कृपा दीन्हा, चौरासी भरपाई ।। टेक
चार वेद है श्वांसा जाकी, ब्रम्ह अस्तुती गाई ।
सो कथी ब्रम्हा सृष्टि भुलाई, वह माता सब जाई ।। टेक
जप-तप जोग यज्ञ वृत पूजा, बहु परपंच अपारा ।
जैसे बधिक मीन ओट की, टाटी दे विश्वास अहारा ।। टेक
सतगुरू पीव जीव के रक्षक, जा तो करो मिलना ।
जाके मिले परम सुख उपजे, पावे पद निरवान ।। टेक
जुगन-2 हम आन चेताये, कोई -2 हंस हमारा ।
कहे कबीर सा. तहाँ पहुंचाऊं, सतपुरूष दरबारा ।। टेक

==

151. ऐसी भक्ति न कीजिये, जग में होवे हांसी ।
अंतकाल जम मारही, देय देह गल फांसी ।। टेक
जैसे मंजारी पर मोछ से, झूंठा वरत किया ।
सिर से दीपक डार के, मुंसा गही लिया ।।
जैसे लाख पिंघल चली, पावक के संगा ।
पल एक बाहर काढ़ता, हो जावे भदरंगा ।।
जैसे गेंद दरियाव में, जल में रहे भरपूरा ।
जल से बाहर निकलता, ऊतर डारे धूरा ।।
दीखत को बुग ऊजलो, मन मैलो रे भाई ।
आँख मीच वो मुनि भयो, मछली गटकाई ।।
सेल संभालो सांच का, पाँचों से लड़िये ।
कहे कबीर गुरू ज्ञान से, जीवत ही मरिये ।।

==

152. मेरे सतगुरू पकड़ी है,बांह, नहीं तो मैं बहि जाती । टेक
जग झूठा बदनाम है, मन ज्ञानी अभिमान ।
सतगुरू बोली बोलिया, जामें भनक पड़ी मेरे कान ।। टेक
वारू नग पैदा किया, धन कारीगर सोय ।
सिकलीगर सतगुरू मिले, दरश दिखाओ मोय ।। टेक
माया मार ममता तजे, शब्द सनेही होय ।
लोभ-लालच सब तजे, सतगुरू परसे सोय ।। टेक
काम-क्रोध जो त्याग है, तिन घर भरम समाय ।
कहे कबीर सा. से बांचही, नहीं तो जमपुर जाय ।। टेक

==

153. गुरूदाता म्हने संजीवन मोहर दे दई । टेक
छिन-2 पाप म्हारा, कट्वा लागा ।
बद्ले लगी म्हारी प्रीत नई ।
बांदलो तोड़ी साहिबा बरखा है भारी, चहुं दिसी लाली रही समाई ।।
अमरापुर के माहो खेती बोई, हीरा नगरी भेट भई ।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, दिल की दुविधा दूर गई ।।

==

154. मुक्ति रहेगी तेरी दासी रे साधु भाई, गुरू मेरा है अविनाशी । टेक
ब्रम्हा जाको पार न पावे, निरंजन करे खवासी ।
सहस्त्र-2 मुख निशदिन गावे, सो भी पार न पासी ।। टेक
शंकर जाको ध्यान धरत है, कहिये जोग अभ्यासी ।
चार वेद को भेद न जाने, खीज-2 खजासी ।। टेक
औंकार में भ्रमत डोले, विष्णु फिरे उदासी ।
नाम पदारथ हाथ नी आवे, पड़े काल की फांसी ।। टेक
अजर-अमर एक प्रेम पुरूष है, वो कहिये फुलवासी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधौ, अमरापुर का वासी ।। टेक

==

155. मुक्ति भरेगी यहां पानी रे साधौ भाई, सतगुरू है निरवाणी । टेक
अष्ट सिद्धि करे मंजूरी, और विधाता रानी ।
चन्द्र-सूरज दोई भये चिरागी, सुरत गगन गहरानी ।। टेक
अर्थ धर्म और काम मोक्ष फल, बैल फिरे ज्यों घानी ।
तहां एक है, अगम-अगोचर, निगम नेति न जानी ।। टेक
चार वेद नौ व्याकरण कहिये, अष्टादश है पुरानी ।
सत्य भक्ति बिन चार पदारथ, काग भिष्ट सम जानी ।। टेक
अवरन-वरन रूप नहीं वाको, गरज गगन गहरानी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधौ, अजर-अमर निशानी ।। टेक

==

156. गुरूजी माने कई विधि पार उतारो । टेक

ऊंडा नीर थग नहीं वाको, दीखत नहीं किनारो ।
बाल बराबर पाल बंधी है, पवना को चलत सहारो ।।
चार चामरी करत खाबरी, दिल नहीं देत सहारो ।
तृष्णाजी को बाण चलत है, गुरू तो बचावन हारो ।।
मोह मगरमच्छ पड़ीरिया है, भंवर पड़े अतिभारो ।
दुविधा लारे लाग रही है, काल को बाजे नगारो ।।
गुरू का वचन हाथ ले चाबुक, नाम की नौका डारो ।
कहे कबीर सुनो धर्मदासा, एहि विधि लागो किनारो ।।

==========

157. नाम सुमर मन गेला, सतगुरू देवे हेला । टेक

यो संसार हाट को मेलो, मात-पिता सुत भेला ।
घर की नारी गोत कंडूबो, साथ नहीं चलेला ।।
लख चौरासी भटकत-2, मनखा जनम दोहेला ।
मनखा जनम मुश्किल से पायो, पुन जाग्यो ओ पेला ।।
रात-दिवस धंधा में लाग्यो, स्वारथ काज करेला ।
मोह की फांसी में आ फंसियो, सांधिया कुटुंब संग मेला ।।
कंकर चुन-2 महल बनाया, कितना दिन तू रहेला ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, जावे जीव अकेला ।।

==========

158. गुरू ने मंगाया चेला लेकर आना रे । टेक
पहली शिक्षा आबा लाओ, गांव बस्ती के पास न जाओ ।
नर-नारी को छोड़ के, झोली भरकर लाओ ।।
दूजी शिक्षा जल ले आओ, कुआं-बावड़ी के पास न जाओ ।
नदी-समुंद छोड़ के तुम, तूंबी भरकर लाओ ।।
तीजी शिक्षा लकड़ी लाओ, झाड़ी जंगल के पास न जाओ ।
सूखी आली छोड़ के तुम, भारी लेकर आओ ।।
चौथी शिक्षा मांस ले आओ, जीव-जंतु के पास न जाओ ।
मुर्दा-जिंदा के छोड़ के तुम, मांस लेकर आओ ।।
कहे कबीर सुनो नर लोही, ओ पद बूजे बिरला कोई मुगत गुरू से पाओ ।।

---

159. मिलना कठिन है मैं कैसे मिलूं, पिया जाय । टेक
अगम भूमि जहां महल की, हमसे चढ़यो नहीं जाय ।।
औघट-घाट गैल रपटणी, पांव नहीं ठहराय ।
साध-2 पग धरूं पंथ पर, , बार-2 डिग जाय ।।
अति बारीक पंथ बहु झीना, सुरति झकोरा खाय ।
लोक-लाज मरजाद जगत की, देखत मन सुखचाय ।।
जो या बात नहीं जो बने, तो लाज तजी न जाय ।
दूजे सतगुरू मिले पंथ पर, मारग दियो बताय ।।
साहेब कबीर मुक्ति के दाता, शीतल अंग लगाय ।। टेक

---

160. गंगा मत जा रे, भारी काया में गुलजार । टेक
करनी क्यारी बोई के, रहे रहनी रखबार ।।
कपट कागलो परो उड़ायो, देखी अजब बहार ।
मन मैलो पर मोदियो, करे शील को बार ।।
दया वृक्ष सूखे नहीं, सींचो खुंभा जल धार ।
गुल क्यारी के बीच में, फूल रही फुलवार ।।
फूल गुलाबी अजब रंग, गुल-गुलाबी हार ।
अष्ट कंवल के ऊपरे, लीला अगम अपार ।।
कहे कबीर चित चेत के, आवागमन निवार ।

==

161. भक्ति रा विड़द दुहेला, हो वानेरा । टेक
मन कर ग्रहण चौसठ पर रचिया, सतगुरू भक्त अकेला ।
विकट पंथ बैराट कहिये, बिरला संत निभेला ।।
सूरा सस्तर धरे न धरनी, आय मिले नर पेला ।
शीष पड़्या पोछे धड़ बांका, झूझे खेत छोड़ नहीं गैला ।।
तन की आस तनक नहीं राखे, टूक-2 तन देला ।
होय आगा पग पाछा देला, पर्वतर वहीं छपेला ।।
सत सागर की पाल कबीर दिया हेला, सुन हरे मन गैला ।
एड़ा-2 विड़द निभावे, सत सूरा सोही गुरू का चेला ।।

==

162. सतगुरू बोले अमृत वाणी, बरसे कामली भीजे पाणी । टेक
औघट-घाट भरे पणिहारी, पाथर फूटा गागर सारो ।
तले गागर ऊपर पणिहारी, लड़के की गोद में खेले महतारी ।।
चलेगा पंछी थाके वाटा, सोवे डोकरियो गोरवे खाटा ।
ससुरा सोवे बहु हुलरावे, जागे ससुरा बाग लगावे ।
खूंटा हे दूवे भैंस बिलोवे, बैठी मिनिया माखन खावे ।।
नौका डूबे सिला तिरावे, चोली का पाणी बलिड़े जावे ।
कहत कबीर सुनो नर लोई, ओ पद बूझे बिरला कोई ।

==

163. आई लड़े सोई सूरा रे अवधू । टेर
जनम लियो सोई मरसी, दम-2 का लेखा भरसी ।
थारा जम सरीका बैरी, क्यों सूतो नींद घनेरी ।।
एक नाम तना आधारा, है वांका सकल पसारा ।
तोप बंदूक नहीं छूटे, गुरूगम से कायागढ़ लूटे ।
दौड़ शिखर गढ़ लेना, जल्दी से डेरा देना ।
बठेलागा कबीर सा. का डंका, जीत लिया गढ़ बंका ।

==========

164. बंगला खूब बना है निरगुण, मूरख नारायण जप ले । टेक
इस बंगले के दस दरवाजे, पवन लगे दो खंबा ४ ।
आवत-जावत कोई न देखा, ये है बड़ा अचंभा ।।
चार तत्व की भीत डरी है, पाँच तत्व की गंगा ।
रोम-रोम की छपरा छाया, चीन्हे न चीन्हत हारा ।
दास कबीर एक चरखा चलता, आठ पहर एक तारा ।।
वर्ण-2 के भूत कता जहां, मच रहा झंझारा ।

==========

165. मन नेकी करले, दो दिन का मेहमान । टेक
जोरू लड़का कुटुंब-कबीला, दो दिन का तन-मन का मेला ।
अंत काल को चला अकेला, तज माया मंडान ।
कहां से आया कहां जायेगा, तन छूटे मन कहां रहेगा ।
आखिर तुमको कौन कहेगा, गुरू बिन आतम ज्ञान ।
कौन तुम्हारा सच्चा सांई, झूठा यह संसार सदा ही ।
कहां मुकाम कहां जाय समाई, क्या बस्ती क्या गांव ।
रहट माल पनघट पर फिरता, जावत रीता आवत भरता ।
जुगन-2 से जाता भरता, क्यों करना अभिमाना ।
हिल-मिल रहना देके खाना, नेकी बात सिखावत रहना ।
साहिब कबीर का सत है कहना, भज लो निर्गुण नाम ।

==========

166. ओ तो घर और है साधौ भाई, गुरू बिन पाओगे नाहीं । टेक

नहीं ज्ञानी नहीं ध्यान, नहीं कोई रेणी करणी ।

नहीं भेक नहीं टेक, नहीं, कोई तरणा-तरणी ।।

जती-सती मुनि नहीं-2, सिद्धक नहीं साधक ।

बिन सतगुरू की सैन बिना, नहीं छूटे है पावक ।।

नहीं बीज व खोज नहीं, वहां सोहंग सांसा, कौन-2 नर गया, कौन ने कीना वासा

हद-बेहद दोनों नहीं, नाम ठाम भी नाय, अब सुमिरन किसका करूं जी कुछ भी दीखत नाय ।

नहीं पिरथी नहीं पावक, नहीं वह सायब सुंदर ।

नहीं दिवस नहीं रैन, नहीं वह सूरज सुंदर ।।

मरजीवा का देश है, मरजीवा ही जाय ।

अभिमान छूटा बिना रे, तुरंत काल खा जाय ।।

धरो किसी का ध्यान, कहो जी कौन बताय ।

खंड-पिण्ड भी नहीं, रंग वहां कहां से आय ।।

सुन्न शिखर दोनों नहीं, न अजपा का जाप ।

तू मूरख भटकत फिरे, तुझ में आयो ही आप ।।

नहीं आवे नहीं जाय, नहीं कोई मरे न जन्मे ।

सतगुरू जाने भेद दयामय कोयक तज में ।।

काल अमल व्यापे नहीं, ऐसा अपरम्पारा,।

वो तो लीलाधर है जी, कहत कबीर विचारा ।।

==

167. संतो तन चीन्हे मन पाया हो । टेक

तन चीन्हे मन पाया, तन ही मन है,
निरगुन मन है, मन ही निरंजन राया ।।
मन-गुण तीनों पाँच तत्व में, मन का सकल पसारा ।
जैसे चन्द्र उदक में दीखे, है मांही संत न्यारा ।।
जागृत सुपन सुषोपित तुरिया, चारों मन के मांई ।
तन औतार असंख्य कला हो, ये तष में दूसरा नाहीं ।।
आद हता सो अब है, संतो सतगुरू भेद बताया ।
कहे कबीर कंचन के भूषण, एक हुआ जब ताया ।।

==

168. संतो ज्ञान कौन से कयि । टेक

ज्ञान कौन से , कहिये कौन ध्यान है ।
विज्ञान कौन है, कैसे निज पर लहिये ।।
कौन है जीव ब्रम्ह कहूं को है, कौन अक्षर से न्यारा ।
कौन है नाम-अनामी, कौन कहिये अवतारा ।।
चार अवस्था पाँचों मुद्रा, जोग करे सो कवना ।
मुक्त नाम काहे सो कहिये, कौन सार निज पवना ।
कहो शब्द कहां से आया, करत आवाज अमोला ।
का टकसार होत अंदर में, कौन राह होय बेला ।।
बाहर-भीतर व्यापक को है, सकल ठौर में वासा ।
उत्पत्ति परले कौन करत है, को करे सबै तमासा ।।
येता जुगत लखे सो को है, अलख नाम है काको ।
कहे कबीर सुनो भाई संतो, खोज करो तुम ताको ।।

==

169\. संतो सुनो शब्द का जाला, करिहो ध्यान जान जबै पै हो हासल सबै हिसाबा ।

ज्ञान सोई जो आतम चीन्हे, और ज्ञान कुछ नाहीं ।
चार दिशा के छोड़ आसरा, मगन रहे मन माहीं ।।
ध्यान सोई जो सुमन दरसे, बालक सम विज्ञाना ।
या रहनी में चूके नाहीं, चाहे न मान गुमाना ।।
जीव सोई जो जुग-2 जीवे, उत्पत्ति परले माहीं ।
देह धरी भर में चौरासी, निरभय कबहुं नाहीं ।।
ब्रम्ह सोई जो सब घट व्यापक, निरक्षर है नाहीं ।
औंकार आदि सबही के त्रिगुण तत्व ता माहीं ।।
नाम सोई जाके हैं रूपा, निरक्षर निज नामा ।
राम कृष्ण औतार आदि लौं, धरे निरंजन नामा ।।
शब्द सोई जो सबसे न्यारा, त्रिकुटी मुंह टकसारा ।
एके द्वार होय बानी बोले , निकसे मुख के द्वारा ।।
मन ही मुद्रा मन ही करता, मन ही हैं तिहुं लोका ।
उक्त नाम वाही सों . कहिये, मिट गये धंधा धोका ।।
सार पवन सबही के ऊँपर, पंचासी के पारा ।
उत्पत्ति परले काल करत है, तासौ है वह न्यारा ।।
कहे कबीर यह लेख बताऊं, संत होय सो बूझे ।
गुप्त प्रगट और बाहर भीतर, सकल ठौर तिहिं सूझे ।।

==

170. संतो माया तजी न जाई, जैसे बेल वृक्ष लिपटाई ।
काम तजे तो क्रोध न छूटे, क्रोध तजे तो लोभा ।
लोभ तजे तो आशा माडे, मान बड़ाई शोभा ।।
गेह तजे तो मढ़ी बनावे, उदय अस्त दे [illegible] फेरी ।
कुटुम तजे सिख मारग, चाहे मन माया ने घेरी ।।
देखत पैसा हाथ न छूवे, फूटि फाबरी ताके ।
आदर मान कछु न चाहे, दिनो माया झाके ।
कर्म संजोग माया न पावत, तो लग माया त्यागी ।
आशा-तृष्णा मिटी न मन की, का गिरही बैरागी ।।
स्वामी सिख साखा के कारण, सो जोजन चलि जावे ।
जो छूटे तो सिद्धि छूटे, हिरदे ज्ञान समावे।
माया त्यागे मन बैरागी, शब्द में सुरति समानी ।
कहे कबीर सोद संत जौहरी, जिन झूठी कर जानी ।।

==

171. संतो सहज समाधि भली है ।
जब हो दया भई सतगुरू की, सुरत न अंत चली है । टेक
जहाँ जाऊं सोई परिक्रमा, जो कुछ करो सो पूजा ।
शब्द निरंतर मनुवा राचा, भाव मिटाऊं दूजा ।।
शब्द निरंतर मनुवा राचा, मलिन वासना त्यागी ।
जागत, सोवत, उठत-बैठत, ऐसी तारी लागी ।।
आँख न मूंदो कान न रूंधो, काया कष्ट न धारो ।
अधर सेन में साहेब देखी, सुंदर बदन निहारो ।।
कहे कबीर या सुखमन रहनी, जो प्रगटे कहि [illegible] गाई ।
सुख-दःख के वह परे परम पद, सदा रहत सुखदाई ।।

==

172. संतो संत विलग कब कीन्हा,।
लोक-लाज कुल की मर्यादा, सबै त्याग उन दीना ।*
जांत-पांत का मर्म लिया है, सो तो काल अधीना ।।
अपने रूप को चीन्हत नाहीं, ताते दुविधा कीन्हा ।
तुलसी ब्राम्हण बड़े कुलीना, सब कोई कहै परवीना ।।
नाभाजी भंगी के बालक, तासु प्रसादी लीन्हा ।
ना मानो तो साख बताऊं, अंजहुं चेत कमीना ।।
सुपच भक्त रैदास चमारा, आप बराबर कीन्हा ।
शिवरी जात कौन कुल कहिये, सो हरि आप अधीना ।।
भाव भक्ति संतन के कारण, राम प्रसादी लीन्हा ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधौ, इतनी साख करि दीन्हा ।।
गुरूमुख होय साधौ को चीन्हे, नुगरा मति के हीना ।

==

173. मनवा थारी मति चलूं तो, सीधो नरक ले जावे ।
मन म्हारा तोहे किस विधि समझाऊं । टेक
सोना होय तो सुहाग मगाऊं, बंकनाल रस लाऊं ।
ज्ञान शब्द की फूंक चलाऊं, पानी कर पिघलाऊं ।।
घोड़ा होय तो लगाम लगाऊं, ऊपर जीन कसाऊं ।
होय सवार तेरे ऊपर बैठूं, चाबुक देके चलाऊं ।।
हाथी होय तो जुंजीर गढ़ाऊं, चारों पैर बंधाऊं ।
होई महावत तेरे ऊपर बैठूं, अंकुश लेके चलाऊं ।।
लोहा होय तो एरण मगाऊं, ऊपर धुवन धुवाऊं ।
धूवन की घनघोर मचाऊं, जंतर तार खिंचाऊं ।।
ज्ञानी न हो ज्ञान सिखाऊं, सत्य की राह चलाऊं ।
कहत कबीर सुनो भाई साधौ, अमरापुर पहुंचाऊं ।।

==

174. लाख कहो समझाय, सीख मोरी एक न माने रे । टेक
यह मन ऐसा बावरा रे, करे अनोखे काम ।
स्थिर होय कबहुं लेत नहीं , एक पल प्रभु का नाम ।।
हानि और लाभ जाने रे, सीख मोरी एक न माने रे ।
कहां लग मैं वर्णन करूं, अवगुंण भरे अनेक ।
हित-अनहित जाने नहीं, अपनी राखत टेक ।
अमिय विष एक में साने रे, सीख मोरी एक न माने रे ।।
जहां-तहां मारा फिरे, भली-बुरी सब ठौर ।
जाने को चूक नहीं, जहां लक याकी दौर ।।
रहे नहीं एक ठिकाने,रे, सीख मोरी एक न माने रे ।
यह मन है बहुरूपिया, कहे कबीर विचार ।
ज्ञानी मूरख बावरा, धरे स्वांग हजार ।।
तकरार संतन से ठाने रे, सीख मोरी एक न माने रे ।

==

175. जतन बिन मिरगा खेत उजारा । टेक
पाँच मिरगा पच्चीस मिरगनी, तामें तीन शिकारा ।
अपने-2 रस को भोगे, चुग रहे न्यारा-2 ।।
उड़ि के झुण्ड मृगा के आये, बैठे, खेत मझारा ।
हो-हो करती लाल ले भागे, मुख बाये रखवारा ।।
मारे-मारे टरे नहीं, टारे बिडरे बिडारा ।
अतिही प्रपंच महादुखदायी, तीन लोक पचिहारा ।।
ज्ञान का मूल सुरती का भूखा , गुरू का शब्द रखवारा ।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, बिरले भले संभारा ।।

==

176. रस गगन गुफा में अंजर झरे ।
बिन बाजा झनकार उठे जहां, समझ पड़े जब ध्यान धरे ।।
बिन तालाब जहां कमल फुलाने, तेहि चढ़ि हंसा केलि करे ।।
बिन चंदा उजियारी बरसे, जहां-2 हंसा नजर परे ।
दसवें द्वारे ताली लागी, अलख पुरूष जाने ध्यान धरे ।।
काल-कराल निकट नहीं आवे, काम-क्रोध मद लोभ जरे ।
जुग-जुगन की तृष्णा बुझती, करम-भरम अब व्याधि टरे ।।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, अमर होय कबहुं न मरे ।।

==

177. जनम सब धोखे से खोय दियो,। टेक
द्वादस वर्ष बालापन बीता, बीस में जवान भयो ।
तीस बरस माया के फेरे, देश-विदेश गयो ।।
चालीस बर्ष अंत जब लाग्यो, बाढ़ो मोह नयो ।
धन और धाम पुत्र के कारण, निश दिन सोच भयो ।।
बरस पचास कमर भई टेढ़ी, सोचत खाट लियो ।
लड़का बाके बोली बोले, बूढ़ो मरि नी गयो ।।
बरस साठ सत्तर के भीतर, केश सफेद भयो ।
मात-पीत कफ घेर लीन है, नयनन नीर भयो ।।
न गुरू भक्ति न साधु की सेवा, न शुभ कर्म कियो ।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, चोला छेटि गयो ।।

==

178. बिना सतनाम अपना नहीं कोई । टेक
बाग लगायो बगीचा लगायो, और लगायो केला ।
इस पिंजरे से प्राण निकल गये, रह गयो चाम अकेला ।।
तीन महीना तिरिया रोवे, छः महीना सग भाई ।
जनम-जनम को माता रोवे, करि गयो आस पराई ।।
पाँच-पचास बराती आये, लेचल-लेचल होई ।
कहत कबीर सुन भाई साधौ, यह गति सबकी होई ।।

==

179. बिना सत्संग कुमति न छूटी,। टेक
चाहे जाओ मथुरा, चाहे जाओ काशी, हृदय की मोह गूंथि न टूटी ।
चाहे पढ़ो गीता, चाहे पढ़ो पोथी, हिये कपाट की चारों फूटी ।।
चाहे पूजो देवी, चाहे पूजो देवता, ये ठगनी सब देश को झूठी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधौ, पी लेऊ संत नाम की बूटी ।।

==========

180. जप मन सत्य सुखदाई, जो चाहे जगत में अपनी मूढ़ भलाई । टेक
गर्भवास में भक्ति कबूल्यो, सो सुन संधि बिसराई ।
आप पड़यो माया के फंदे, मोह जाल उलझाई ।।
माता-पिता सुत भाई-बंधू, त्रिया बहिन भुआ भौजाई ।
अपने-अपने स्वारथ कारण, प्रीति करत सब आई ।।
भवसागर में भटकत-भटकत , यह मानुष तन पाई ।
खोवे वृथा भक्ति बिन प्रभु को, धिक ऐसी चतुराई ।।
कहत कबीर चेत अबहुं नहीं, फिर चौरासी पाई ।
पाय जन्म सुअर, कुत्ता को, भोगेगा दुःख भाई ।।

==========

181. को सिखवे अधमन को ज्ञाना ।। टेक
साधु संगति कबहुं न कीन्हीं, रटत-रटत सब जन्म सिराना ।
दया धर्म कबहुं नहीं कीन्हो, नहीं लागे सतगुरू के बाना ।।
कर्जा काढ़ के वेश्या राखी, साधु आवे तो घर नहीं दाना ।
कहैं कबीर जाऊ सब यमपुर, मारहिं-मार उठे घमसाना ।।

==========

182. हरि को ध्यान धरो रे भाई, तेरी बिगड़ी बात बन जाई । टेक
रेनुका तारे गनिका तारे, तारे सजन कसाई ।
सुआ पद्मावती गणिका तारि, तारी मीराबाई ।।
दुनिया-दौलत माल खजाने, बांधया बैल चराई ।
जबहिं काल का डंका बाजे, खोज खबर नहीं पाई ।।
ऐसी भक्ति करो घट भीतर, छोड़ कपट चतुराई ।
सेवा बंदगी और अधीनता, सहज मिले गुरू आई ।।
कहत कबीर सुनो भाई साधौ, सतगुरू बात बताई ।
यह दुनिया दिन चार दिहाड़े, रहो नाम लौ लाई ।।

==

183. भीगे चुनरिया प्रेम रस बूंदन । टेक
आरत साज के चली है सुहागन, पिय अपने को ढूंढन ।
काहे की तोरी बनी है चुनरिया, काहे के लागे फूंदन ।।
पाँच तत्व की बनी चुनरिया, नाम के लागे फूंदन ।
चढ़के महल खुल गये रे किवरवा, दास कबीर लागे झूलन ।।

==

184. नर तुम काहे को माया जोड़ी । टेक
कोड़ी-कोड़ी माया जोड़ी, जोड़ी लाख करोरी ।
जब खर्चन की बारी आई, रह गये हाथ सकोरी ।।
हाथी लाये घोड़ा लाये, लाये सेना बटोरी ।
अंत समय कुछ काम न आवे, रही काठ की घोड़ी ।।
जा उतारे गंग घाट पे, कपड़ा लीन्हो छोरी ।
भ्राता पुत्र बिमुख होय बैठे, फूंक दई जैसी होरी ।।
देंगे दूत दारून दुःख भारी, हाथ पैर सब तोरी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधु, नरक में जाय डारी ।।

==

185. भक्ति का मारग झीना रे कोई जानेगा जानतहारा, संतजन परवाना रे । टेक
नहीं अचाह-चाह कुछ उर में, मन लौ लौ लीना रे ।
साधुन को संगत में निशदिन रहता भीना रे ।।
शब्द में सुरती बसे, जैसे जल बिच मीना रे ।
जल बिछुरे तत्काल होत, जिमी कमल मलीना रे ।।
धन कुल कर अभिमान, कर रहे अधीना रे ।
परमारथ के हेत-देत सिर, बिला न कीन्हा रे ।।
धारण करि संतोष सदा, अमृत रस पीना रे ।
भक्ति रहस्य कबीर सकल, परगट कर दीना रे ।।

==

186. भजन बिन काई न जग उमरिया । टेक
स्वांस पर स्वांस आवे, फेरि स्वांस बहुरि ।
आवत-जावत कोई न देखा, रैन दिवस सगरी ।।
वेद पढ़ता पण्डित मर गये, योग धारंता योगी ।
करत अचार-अचारी मर गये, जब काल पसारी ।
कहे वृत लोक यह दुनिया, चौदह लोक पसरी ।।
रहे न धर्म जगत के करता, जिसने सृष्टि संचरी ।
रहे न चन्द्र सूर्य धन तारा, और की कौन कही ।
जल-थल महीं आकाश समाना, याहि में फिर बिगरी ।
धरी नर देह शब्द है भाषा, बिरले समझ परी ।।
कहे कबीर हम जुग-जुग खयाल, शब्द में सुरत धरी ।

==

187. बागों मत जा रे तेरी काया,में गुलजार । टेक
करनी क्यारी बोई के, अपनी रखौ रखवार ।
कपट का काग उड़ाय के, देखौ अजब बहार ।।
मन माली पर बोधिये, करि संयम की बार ।
दया वृक्ष सूखे नहीं, सींच क्षमा जल टार ।।
गुल क्यारी के बीच में, फल रहा कचनार ।
खिला गुलाबी अजब रंग, गुल-गुलाब की डार ।।
अष्ट-कमल से होत है, लीला अगम अपार ।
कहे कबीर चित-चेत के, आवागमन निवार ।।

==

188. कोई जानेगा जाननहारा, साधु अंधाधुंध अंधियारा । टेक
यो घट भीतर वन और बस्ती, याही में झाड़ पहारा ।
या घट भीतर बाग-बगीचा, याही में सींचनहारा । टेक
या घट भीतर सोना-चांदी, याही में लगा बजारा ।
या घट भीतर हीरा-मोती, याही में परखनहारा ।।
या घट भीतर सात समुंदर, याही में नदियां नारा ।
या घट भीतर सूरज-चंदा, याही में नौलख तारा ।।
या घट भतर बिजली चमके, याही से होय उजियारा ।
या घट भीतर अनहद गरजे, बरसे अमृतधारा ।।
या घट भीतर देवी-देवता, याही में ठाकुर द्वारा ।
या घट भीतर काशी मथुरा, याही में गढ़ गिरनारा ।।
या घट भीतर ब्रम्हा-विष्णु, शिव सनकादि अपारा ।
या घट भीतर आप लेत हैं, राम,कृष्ण अवतारा ।।
या घट भीतर कामधेनु है, कल्पवृक्ष एक न्यारा ।
या घट भीतर ऋद्धि-सिद्धि, के अटल भरे भण्डारा ।।
या घट भीतर तीन लोक है, याही में करतारा ।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, याही में गुरू हमारा ।।

==

189\. सौदा करे तो जाने साधौ, कायागढ़ खूब बजारा । टेक
या काया में हाट लगा है, बैठे साहूकारा ।
या काया में चोर फिरत है, लुच्चे ढीठ लवारा ।।
या काया में लाल जवाहरत, रत्नों की खान अपारा ।
या काया में हीरा-मोती, परखे परखनहारा ।।
या काया में वेद पाठ करि, पण्डित करे विचारा ।
या काया में काजी मुल्ला, देवे बाँग पुकारा ।।
या काया में धनी विराजे, तिनका ओट पहारा ।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, गुरू बिन जग अँधियारा ।।

==========

190\. योगी या विधि मन को लगावे । टेक
जैसे नटनी चढ़े बांस पर, नटवा ढोल बजावे ।
सारा बोझ साध सिर ऊपर, सुरत बांस से लावे ।।
जैसे सखी जात पनघट पर, सिर धरि गागर लावे ।
सखियाँ संग सुरति गागरी में, अवर चित नहीं जावे ।।
जैसे लुहार कूटत लोहे को, अहरन फूंक लगावे ।
ऐसी चोट लगे घट अंदर, माया रहन न पावे ।।
जोग-जगति से आसन मारे, उल्टी पवन चलावे ।
कष्ट आपदा सबहिं सहारे, नजर से नजर मिलावे ।।
जैसे मकरी तार आपनो, उलटि-पुलटि चढ़ जावे ।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, वाही में उल्टी समावे ।।

==========

191. मैं कासे कहूं कोई न माने कही,। टेक

बिन सतनाम भजन यह विरथा, आयु जाय रही ।
आतम त्यागी पाषाणहि,पूजे, धरि दुलहा-दुलही ।।
किरतन आगे करता, नीचे है अंधेर यही ।
पशु को मारि यज्ञ में होमे, निज स्वारथ ही ।।
एक दिन तुमसे आप अचानक, बदलो लेय सही ।
पाप कर्म करि सुख को चाहे, यह कैसे निबही ।।
पार उतरना चाहे सिंधु से, स्वान की पूंछ गही ।
कहे कबीर कहूं मैं जो कुछ, मानो ठीक वही ।।

==========

192. कब भजो सतनाम म्हारा, कब भजो सतनाम । टेक

बालापन सब खेल गमायो, जवानी में व्यापो काम ।
वृद्ध भये तन कांपन लागे, लटकन लागी चाम ।।
लाठी टेक चलत मारग में, सही जाती नहीं वाम ।
कानन बहन नयन नहीं सूझे, दाँत भये बेकाम ।।
घर की नारी बिमुख होय बैठी, पुत्र करत बदनाम ।
बड़बड़ाय है विरधा बूढो, अटपट आठों याम ।।
खटिया से भूमि पर कर देवे, छूटि जावे धन-धाम ।
कहत कबीर कहां तक कहूं, पड़यो यम से काम ।।

==========

193. कायागढ़ जीती रे भाई, । टेक

ज्योति स्वरूपी देव निरंजन, वेदन उनको गाई ।
ओहं रंग जहां दुई, दल अजपा नाम सहाई ।।
सुरति-सुहागन मिली पिया को, उनकी तपन बुझाई ।
कहे कबीर मिले गुरू पूरे, शब्द से सुरति मिलाई ।।

==========

194. संतन के बस भये हरीजी, जाति वरण कुल जानत नाहीं ।
गावत प्रेम सच्चा शिबरी जाति, भिल्लनी होनी बेर तोर के लाई ।
प्रीति जाति वाके फल खाये, तीनेऊ लोक बड़ाई ।।
विदुरजी ने अचरज कीन्हो, हरि सो प्रीति लगाई ।
छप्पन भोग त्याग के गये, पहिले खिचरी खाई ।।
नाम देव पीपा रैदासा, तीन ने तो मान मिटाई ।
सैन भक्त का संसय मेट्या, आप भये हरि नाई ।।
सहस्त्र अठासी ऋषि-मुनि होते, शंख तो भी नहीं बाजई ।
कहत कबीर सांच के आये, शंख मगन रहे गाजई ।।

==

195. संतो सोई सतगुरू मोही भावे, जो आवागमन मिटावे । टेक
डोलै डिग के बोलत बिसरे, अस उपदेश सुनावे ।
बिना श्रम हट क्रिया से, न्यारी सहज समाधि लगावे ।।
द्वार निरोध पवन नहीं रोके, नहीं अनहद उरझावे ।
यह मन जहां जाय तहां, निर्भय समता से ठहरावे ।।
कर्म करे सब रहे अकर्मी, ऐसी मुक्ति बतावे ।
सदा आनंद फंद से न्यारा, भोग में योग सिखावे ।।
तजि धरती आकाश अधर में, प्रेम मढ़ैया छावे ।
ज्ञान शिखिर की मुक्ति शिला पर, आसन अचल जगावे ।।
अंदर-बाहर एक ही देखे, दूजा भाव मिटावे ।
कहे कबीर सोई गुरू पूरा, घट बीच अलख लखावे ।।

==

196. संतो जीवत की करूं आशा । टेक
मरे मुक्ति गुरू कहे स्वारथी, झूठा दे विश्वासा ।। टेक
जीवत समझे जीवत बूझे, जियत होय भ्रम नाशा ।
जियत जो भये मिले तेहि, मुये है मुक्ति निवासा ।।
मन ही से बंधन मन से मुक्ति, मन ही सकल विलासा ।
जो मन भयो जियत बस में नहीं, तो देवे बहू आशा ।।
जो अबसो तबहुं मिलो है, ज्यों सपने जग भासा ।
जहां आशा तहां वासा होवे, मन का यही तमासा ।।
जीवत होय दया सतगुरू की, घट में ज्ञान प्रकाशा ।
कहे कबीर मुक्ति तुम पावो, जीवत ही धर्मदासा ।।

==

197. दिवाने तन नहीं तेरा साथी । टेक
जैसे बूंद ओस का मोती, ऐसे काया जाती ।
तन से मनुवा न्यारा वह है, तन जैसे माटी ।।
खाले-पीले, देले-लेले, ये है आगे आछी ।
दिना चार साहब को भजले, कहां बाधेगा गाठी ।।
भाई-बंधु सब कुटुंब-कबीला, और बेटा नाती ।
जो कोई तुम्हारे काम न आये, दिन की हुई है राती ।।
चार जना मिल लेके चले हैं, ऊपरी चादर तानी ।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, सतगुरू कह गये बानी ।।

==

198. जब से मन परतीत कुछ भई । टेक
तब से अवगुण छूटन लागे, दिन-दिन बाढ़त प्रीत नई ।।
सुरति-निरति मिलि ज्ञान जौहरी, निरखि-परखि जिव वस्तु हुई ।
थोड़ी धनिज बहुत हुवे, उपानन लागे जाल मई ।।
अगम-निगम तू खोज निरंतर, सतनाम गुरू मूल दई ।
कहे कबीर साधौ की संगति, इती विकार तो छूट गई ।।

==

199. दिवानें भजन करले, बीती जाय घड़ी । टेक
भई मैं गिरी हवा जब लागी, माया अमल करी ।
पियत क्षीर मुसकाती मन ही मन, किलकन कठिन करी ।।
खेलत-खात गलिन में [illegible] झूमे, चर्चा और बिसरो ।
ज्वान भये तरूणी संग माने , अब कह क्या सवारी ।।
दक्षिन दिशा छियासी योजन, यमराज नगरी ।
ता मग चलत सूल बहू लागे, सुनले बात खरी ।।
योजन आगे पार वैतरणी, उतर जब जैहों करी ।
चित्रगुप्त जब लेखा [illegible] मागे, जाय वहाँ कहाँ करी ।।
शाह बड़े जहाज के कारण गुरू उपदेश झरी ।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, सतगुरू पार करी ।।

==

200. संतो सतगुरू अलख-लखाया । टेक
परम प्रकाशक पूंज ज्ञान, घट-2 भीतर दर्शाया ।
तन बुंद्धि बानी जाई न जानत, वेद कहत सकुचाया ।।
अगम-अपार अथाह अगोचर, नेति-2 जेहि गया ।
शिव सनकादिक आदि ब्रम्ह के, वह प्रभुं राधन आया ।।
व्यास वशिष्ठ विचारत हारे, कोई पार नहीं पाया ।
तिल में तेल काष्ठ में अग्नि, वृत जप माहि समाया ।।
शब्द में अर्थ पदारथ पद में, स्वर में राग सुनाया ।
बीच माहिं अंकुर तरू शाखा, पत्र फूल-फल छाया ।।
ज्यों आतम में है परमातम, ब्रम्ह जीव और माया ।
कहे कबीर कृपालु कृपा करि, निज स्वरूप परखाया ।।
जप-तप योग यज्ञ वृत पूजा, सब जुजाल छुड़ाया ।

==

201. संतो हरि ने हरि को देखा । टेक
आप ही माल और आप खजाना, आप ही खर्चन वाला ।
आप गली में भिक्षा मांगें, हाथ में लेके प्याला ।।
आप ही मंदिर आप ही मट्टी, आप ही चुगावन वाला ।
आप सुरा अपहीं प्याला, आपहीं फिरे मतवाला ।।
आप नैना आपहीं सैना, आप ही कजरा काला ।
आप गोद में आप खिलावे, आपे मोहन [illegible] माला ।।
ठाकुर द्वारे ब्राम्हण बैठा, मक्का में दरवेशा ।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, हरि [illegible] जैसा का तैसा ।।

===

202. सतगुरू हो महराज मौपे सांई रंग डारा । टेक
शब्द की चोट लगी मेरे मन में, बेध गया तन सारा ।
औषधि मूल कछु नहीं लागे, क्या करे वैद्य विचारा ।।
सुर-नर मुनिजन [illegible] पीर औलिया, [illegible] कोई न पार पावे पारा ।
साहेब कबीर सब रंग रंगिया, सब रंगत से रंग न्यारा ।।

===

203. संतो बोलते जग मारे । टेक
अनबोले कैसे बनि-2 है, शब्द कोई न विचारे ।
पहले जन्म पूत को भयो, बाप जन्म लियो पाछे ।
बाप-पूत की एक मताई, अचरज को काछे ।।
अमर राजा टीका बैठे, विवहर करे खबारी ।
श्वान बापुरो धरनि ठाकुनी, बिल्ली घर में दासी ।।
कागज कार कारकुण्ठ आगे, बैल करे पटवारी ।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, भैंसहि न्याय निवारी ।।

===

204. अँखियाँ हरिदर्शन को प्यासी । टेक
देखन चाहे कमलु नयनन को, हरदम रहत उदासी ।।
केशर तिलक माल मोतियन की, वृंदावन के वासी ।
जेहि तन लगे वोहि तन जाने, लोगन के मन हाँसी ।।
नेह लगाय त्याग दई, तृणसम डाल गये गल फाँसी ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, मेले ही करवट काशी ।।

===

205. कोई सफा न देखा दिल का, संतो । टेक
बिल्ली देखी, बगुला देखा, सर्प जो देखा बिल का ।
ऊपर-2 सुंदर लागे, भीतर गोला पत्थर का ।।
काजी देखा, मुल्ला देखा, पण्डि2 देखा छल का ।
औरन को बैकुण्ट बतावे, आप नरक में सरका ।।
पढ़े-लिखे नहीं गुरू मंत्र को, भरा गुमान कुमति का ।
बैठे नाहीं साधु की संगत में, करे : गुमान वरण का ।।
मोह की फांसी पड़ी गले में, भाव करे कामिन का ।
काम-क्रोध दिन-रात सतावे, लानत ऐसे तन का ।।
सत्यनाम की मूठ पकड़ ले, छोड़ कपट सब दिल का ।
कहे कबीर सुनो सुल्ताना, फेरो फकीरी खिलका ।।

===

206. क्या देखा मन भया दिवाना, छोड़ भजन माया लिपटाना । टेक
पंचम महल देख मति भूलि, अंत खाक मिल जाता ।
कफ पित वायु मल मूत्र भरे हैं, सोई देखकर करत गुमाना ।
राजा राज छोड़के जेहें, और खेती करत किसाना ।।
योगी यती-जती सन्यासी, यह सब काल के हाथ बिकाना ।
मातु-पिता सुत बंधु सहोदरा, यह सब अपने स्वारथ आना ।।
अंत समय कोई काम न आवे, प्राणनाथ जब करहिं पयाना ।
भजन प्रताप अमर तप हो गये, व्यास विभीषन बलि हनुमाना ।।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, राम चरण पर रखो ध्याना ।।

207. टूक जिन्दगी करले, क्या माया मद मस्ताना रे । टेक
रथ गाड़ी सुख पाल-पालकी, हाथी घोड़े नारा रे ।
सबको छोड़ काठ की घोड़ी, चढ़ जावे शमसाना रे ।।
ऊनी पट पीताम्बर अंबर, [illegible] जरी बाफ्ता बाना रे ।
ते तो गजी चार गज ओढ़े, भरा नहीं तोशा खाना रे ।।
कर तदवीर अखीर खरच की, मंजिल दूर की जाना रे ।
मारग माहीं मुकाम मिले नहीं, चौकी हाट दुकाना रे ।।
जीते जी ले जीत जनम को, नहीं पीछे पछताना रे ।
कहे कबीर चहे जो कर यह, छोड़ा यह मैदाना रे ।।

==

208. तुम देखो रे लोगो पदिया में , नैया डूबी जाय । टेक
चीटी चली अपने नेहर, नौ मन कजरो लगाय ।
ऊंट मार बगल में लीन्हा, हाथी लियो लटकाय ।।
एक अचरज ऐसा देखा दुहे आय ।।
दूध-2 को आपन खाये, घी बनारस [illegible] जाय ।
एक अचरज ऐसा देखा, गदहा के हो गए सींग ।
चीटी के गले रस्सा बंधा है, खींचन अर्जुन-भीम ।।
एक चीटी के मूत से नदी बही और नार ।
पापी-2 पार उतर गये, धर्मी रहे मजधार ।।
एक चीटी की मृत्यु हो गई लाखों गिद्ध अघाय ।
वा में कुछ बाकी रह गई तो, चील रही मंडराय ।।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, यह पद है निरबान ।
जो वेद को अरथ लगावे, वाको बैकुण्ट निशान ।।

==